भजन रामायण



खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

भजनरामायण

रचयिता :

श्रीभगवानदास

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन, बम्बई

संस्करण : जुलाई २०१३, संवत् २०७०

मूल्य : २५ रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg,
7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.khe-shri.com
E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass
Prop Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004,
at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate,
Pune -411 013.

॥ श्रीः ॥

अथ भजनरामायण

श्लोकः

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम्।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्॥१॥

भजन

प्रेमी पूरण प्रेम निबाहैं॥ टेक॥
सोई धन्य प्रेमी जो निशिदिन, निज प्रीतमको चाहैं॥ प्रेमी०॥
प्रियतम प्रेमरंग जो राते, तिनको सकल सराहैं॥ प्रेमी०॥
जिस मनमें प्रेमाग्नी प्रगटी, सकल कल्पना दाहैं॥ प्रेमी०॥
कहै रघुवीरदास प्रियतमको, प्रेम करत उतसाहैं॥ प्रेमी०॥

मेरा कछु नाहीं प्रभु, तेरी प्रभुताई है॥ टेक॥
तैंने ही विश्व रचा, तू ही विश्वरूप हुआ,
तेरा ही तमाशा सब, तू ही तमाशाई है॥ मेरा॥
मेरा न ध्यान है हर आन तेरा हरदम है बयान तेरा
जबसे कछु ज्ञान हुआ, तबसे समझ आई है॥ मेरा॥
तेराही दास सदा, दर्शनकी आश सदा,
कीजिये सहाय सदा, संतन सुखदाई है॥ मेरा॥२॥

ठुमरी

हरे राम कहो हरे राम कहो, राम राम कहो हरे हरे॥ टेक॥
मीन वराह हरी अरु कच्छप रामचन्द्र अवतार धरे।
परशुराम नरसिंह कृष्ण बल सनकादिक चारों विचरे॥१॥

नरनारायण यज्ञपुरुष हैं कपिलदेव हयग्रीव तरे।
दत्तात्रेय ऋषभ मन्वन्तर पृथू मोहिनी अति सुधरे।।२।।
नारद वामन हंस व्यास प्रभु बौद्ध होयकर ज्ञान करे।
कल्की कलियुग अन्तमाहिं भये यह चौबीसों रूप धरे।।३।।
रंगनाथजी जगन्नाथजी पुरी द्वारकानाथ वरे।
गोवर्द्धन के नाथ नाथ जग बद्रीनाथ नरनाथ खरे।।४।।
जगदीश्वर परमेश्वर स्वामी सर्वेश्वर सब ठौर सरे।
कमलनयन कमलापति केशव कंस केश कर काल करे।।५।।
मनमोहन मथुरा मनरंजन मन्मथ मुरली मुकुट धरे।।६।।

*****

अथ बालकाण्ड के भजन

राग- टोडी

आये मुनि कौशिक जनक हर्षाने हैं।
बोलि गुरु भूसुर समाजसों मिलन चले,
जानि बडे भाग्य अनुराग अकुलाने हैं।।१।।
नाय शीश पगन अशीश पाय प्रमुदित,
पांवडे अरघ देत आदरसों आने हैं।
अशन वसन वासकै सुपास सब विधि
पूजि प्रिय पाहुने सुभाय सनमाने हैं।।२।।
विनय बड़ाई ऋषिराजऊ परस्पर करत,
पुलकि प्रेम आनँद अघाने हैं।
देखे राम लषण निमेषै थकित भईं,
प्राणहुते प्यारे लगे बिनु पहिचाने हैं।।३।।

ब्रह्मानन्द हृदय दरश सुख लोचनन,
अनुभव उभय सरस राम जाने हैं।
तुलसी विदेहकी सनेहकी दशा सुमिरि
मेरे मनमाने राउ निपट सयाने हैं।।४।।

(रामचन्द्रजी के सहित मुनिजी को स्वयंवर में आये हुए देखकर सखियाँ आपस में कहती हैं।)

ये दोउ कौन कहांते आये ।।
नीलपीत पाथोज वरण मनहरण सुभाय सुभाये।।१।।
मुनिसुत किधौं भूप बालक किधौं ब्रह्मजीव जग जाये।
रूप जलधिके रतन सुछबि तिय लोचन ललित ललाये।।२।।
किधौं रवि सुवन मदन ऋतुपति किधौं हरिहर वेश बनाये।
किधौं आपने सुकृत कल्पतरु सुफल रावरेहि पाये।।३।।
भये विदेह विदेह नेहवश देहदशा बिसराये।
पुलकगात न समात हर्षहिय सलिल सुलोचन छाये।।४।।
जनक वचन मृदु मंजु मधुभरे भगति कौशिकहि भाये।
तुलसी अति आनंद उमँगि उर राम लषण गुणगाये।।५।।२।।

मुनि संग ये दो बालक काके। रतनारे नैना जाके।। टेक।।
राजा बूझे सुनोहो मुनिजी, ये दोउ बालक काके।
कौन नगरमें जन्म लिये हैं, का है नाम पिताके।।१।। रत०
रवि शशि कोटि वदनकी शोभा, श्याम गौर तनु जाके।
राम लषण कौशल्या जाये, दशरथ नाम पिताके।।२।। रत०
पीत वसन वैजंती माला, क्रीट मुकुट शिर जाके।
गौतमऋषि की नारि अहिल्या, तारी चरण छुवाके।।३।। रत०

मुनिको मख पूरण करि आये, गृह आये राजा के।
आय विपति सब हरी राम ने, कारज साधे सियाके।।४।। रत०
सभी सखी सीतावर माँगै, पूजन चली हैं उमाके।
तुलसिदास विधि आज बनी है, लेख लिखे विधिनाके।।५।। रत०

राग- टोडी

ए दोऊ दशरथके बारे।
रामनाम घनश्याम लषण लघु नखशिख अंग उजियारे।।१।। ए दो०
निजहित लागि मांगि आने मैं धर्मसेतु रखवारे।
धीर बीर बिरुदैत बांकुरे महाबाहुबल भारे।।२।। ए दो०
एक तीर तकि हती ताड़का किये सुर साधु सुखारे।
यज्ञ ऱाखि जग साखि तोषि ऋषि निदरि निशाचर मारे।।३।। ए दो०
मुनि तिय तारि स्वयंवर देखन आये भवन तिहारे।
नृप देखिहैं पिनाक नेकु जेहि नृपति लाज ज्वरजारे।।४।। ए दो०
मुनि सानन्द सराहि सपरिजन बार हिं बार निहारे।
पूजि सप्रेम प्रशंसि कौशिकहि भूपतिसदन सिधारे।।५।। ए दो०
शोचत सत्य सनेह विवश निशि नृपति गनत गये तारे।
पठये बोलि भोर गुरुके सँग रंगभूमि पगु धारे।।६।। ए दो०
नगर लोग सुधि पाय मुदित सब ही सब काज बिसारे।
मनहुँ मघाजल उमँगि उदधि रुख चले नदी नद नारे।।७।। ए दो०
ए किशोर धनुघोर बहुत बिलखात विलोक निहारे।
टस्यो न चाप तिन्हते जिन सुभटन कौतुक कुधर उखारे।।८।। ए दो०
राजाने विनु जनक जानियत करि प्रण भूप हँकारे।
नतरु सुधा सागर परिहरि कत कूप खनावति खारे।।९।। ए दो०
सुखमा शील सनेह सानि जनु रूप विरंचि सँवारे।
रोम रोम पद सोम काम शत कोटि वारि फिरि डारे।।१०।। ए दो०

कोउ कहै तेज प्रताप पुञ्ज चितये नहिं जा भियारे।
छुवत शरासन शलभ जरेगो ये दिनकर वंश दियारे॥११॥ ए दो०
एक कहै कछु होय सफल भये जीवन जनम हमारे।
अवलोके भरि नैन आजु तुलसी के प्राणपियारे॥१२॥ए दो०॥४॥

मैं यह प्रण कीन्हों है भाई ॥टेक॥
जो यह धनुको आज चढ़ावै जयमाला सो गलमें पावै।
पीछेसे सब रीति भांति करि वाहीके सँग सिया वरि जाई॥ मैं०॥
रावण बाण आदि सब योधा एक एक गये धनु के पाहीं।
रंचक धनु धरणी नहिं छोडत तब मिथिलेश मनहिं पछिताई॥ मैं०॥
तात शंकसे उठे न लण्मण मनमें क्रोध कियो अति भारी।
तेहि अवसर आयसु मुनि दीन्हों ठाढे भये प्रभु सहज सुभाई॥ मैं०॥
धनुष तोरि प्रभु दुःख सबनको हरो ऐसे जनके सुखदाई।
शब्द सुनत भृगुपति क्रोधित ह्वै आयो सभामें धाई॥ मैं०॥

धनुष केहि तोरारे सभामें आज ॥टेक॥
परशुरामके नयन करारे धस्यो परशुपर हाथ।
क्षत्री तो मैंने एक न छोडा याहि धनुष के साथ॥ धनुष०॥
क्रोधवन्त लखि भृगुपति लक्ष्मण दियो सभामें ज्वाब।
क्षत्री तो तुम्हैं कोउ मिला नहिं निज मुख काहे बढ़ुआत॥ धनुष०॥
तडपि उठो द्विज वचन यही कहि काको जनक यह तात।
मारों क्षणक माहिं यह जड़को गुरुसे उऋण हों आज॥ धनुष०॥
रामचन्द्र करजोरी कहत हैं मैं अपराधी महाराज।
तव प्रभाव बालक नहिं जानत रूप देखि बतरात॥ धनुष०॥
जो कुछ आज्ञा होय स्वामि तब मैं करि लाओं ताहि।
एक शोच धनु टूट न जुडिहै कोटिन करहु उपाय॥ धनुष०॥

ऐसे वचन सुनत शिशुके द्विज हरिसों कहै समुझाय।
कोउ अवतार होउ जो तुम प्रभु धनुष चढ़ाओ भ्रम जाय।।ध०।।६।।

कवित्त

आयो चाप भंग समय सबही जनायो रंग
मानी नृप हिय तबै धरकि धरकि उठे।
रसिकबिहारी नेहवारी पुर नारिनके
कंचुकि सुबन्द आप तरकि तरकि उठे।
उर उमँगे हैं भूप कौशिक लषण आदि
राम भुजदण्ड दोऊ थरकि थरकि उठे।
जनक किशोरीजूके सखिन समेत
दोऊ लोचन सफल चारु फरकि फरकि उठे।।७।।
उठत उठत महि खूब लटपटत
सब सिंधु संघटत जल बेलथल छुटिगो।
शेष फण फटत तलवास हा रटत
वाराहबल घटत जुग डाढसो टूटिगो।
दंत चटचटत महि शैलयुग छटत
दिग्दन्त गण हटत भल कुंभ थल फूटिगो।
दैत्य लुटि लुटत अभिमानते छुटत
कोदण्डके टुटत ब्रह्माण्डसो फूटिगो।।८।।
परिपरि पांय जाय गिरजा निहोरी नित्य
शंकर मनाये पूजे गणपति भावसे।
दीन्हें दान विविध विधान जप कीन्हें
बहु नेमव्रत लीन्हें सिय सहित उछावसे।
रसिकबिहारी मिथिलेशकी दुलारी
दृढ प्रीति उर धारी अवधेश सुत चावसे।

जनक किशोरीके प्रतापसे पिनाक टूटो
टूटो है न जानो राम बल के प्रभावसे।।९।।
तूलकी रही की काहू फूलकी रही कै
मृदु मूलकी रही कै धूल सानकै सजाई थी।
सांटीकी रही की कहो सांची
स्वच्छ माटी लाय कांची
केहूँ कुशल कुलालते कराई थी।
रसिकबिहारी भृगुनाथ भाषिये तो नेक
शंकर समीप या कहाँते किमि आई थी।
हौं तो यह जानों अनुमानते जु कोऊ बाल
ख्याल हेतु धनु ही मृणालकी बनाई थी।।१०।।
वेद पढि जानैं जप यज्ञ बड़ि जानैं
पाप पुण्य बड़ि जानैं बहु बातैं गढ जानैं हैं।
शापबेमें जानैं वर थापबेमें जानैं
दोष ठायबेंमें जानैं तप तापबेंमें जानैं हैं।
खाय जानैं खूब अजूब यांचिलाय जानैं
रसिकबिहारी बालहूँ पढाय जानैं हैं।
एती पुनि आप औरहू अनेक रीति जानैं
एक युद्ध वीरताई विप्र नहिं जानैं हैं।।११।।

(परंतु आप जो बहुत क्रोधयुक्त हो तो)

कजरि-

ऐसी ही कमान बालकेलिकी रुचैं तो
कहौ होवैंगी विदेहगेह अबहीं मँगाउँ मैं।।
रसिकबिहारी जो तिहारी प्रीति याही माहिं
तोपै दुहुखण्ड खैंचि वेगही चढाऊँ मैं।।

नीकी जिय भावै भृगुनाथ तौ निदेश दीजै
हेमकी रचाय मणि माणिक मढाऊँ मैं।।
जोपै तुम्हैं चाहिये कहो तो द्विजराज अबै
याहूते अनोखी चोखी अमित गढ़ाऊँ मैं।।१२।।

अरे जनक ! ।। स०।।
गर्भके अर्भक काटनको पटुधार कुठार कराल है जाको,
सोई हौं बूझत राजसभा धनु के दलिहै दलिहौं बल ताको।
लघु आनन उत्तर देत बड़ो लरिहै मरिहै करिहै कछु साको,
गोरो गरूर गुमान भर्‍यो कहौ कौशिक छोटोसो ढोटो है काको।।१३।।

इति भजनरामायण बालकाण्ड समाप्त।

******

अथ अयोध्याकाण्ड के भजन

भजन-

लाओ जलझारी सियाजी मोरे आई ।। टेक।।
लैकर झारी कनक हाथमें कौसल्या उठि धाई।।
आय पौर पैसेबल कीन्हों ये जोडी विधिने भली रे बनाई।। ला०।।
सबै सखी मिलि मंगल गावैं सीता देखन आई।।
जब मुख सखियां देखन लागी दई हैं अशर्फि
प्रिया मुख देखराई ।।ला०।।
केकई कहै सुनो राजाजी मेरी कह ठहराई।।
मेरे वर तुम अब देव राजा येही समय चितलाई।। ला०।।
तुलसीदास आश रघुवरकी प्रभु चरणन बलिहारी।।
रामचन्द्र वनवास जायँगे भरतको गद्दी तुम देउ बैठाई।।ला०।।१।।

माई री मोहिं न कोऊ समुझावै ॥ टेक॥
राम गमन सांचौ किधौं सपनो मन परतीत न आवै ॥
लगे रहत मेरे नैनन आगे राम लषण अरु सीता॥
तदपि न मिटत दाहया उरकी विधि जो भयो विपरीत॥ मा०॥
दुख न रहै रघुपतिहि विलोकत तनु न रहै विन देखे॥
करत न प्राण पयान सुनहु सखि अरुझि परी यह लेखे॥ मा०॥
कौशल्याके विरह वचन सुनि रोय उठिं सबरानी॥
तुलसिदास रघुवीर विरहकी पीर न जात बखानी॥ मा०॥२॥

तजि दियो भवन सुरति लगि वनको॥ टेक॥
मात कैकयी बोली मारी गांसी लागी तनमें॥
खान पान अयोध्या छोडो
पिताके वचन सुनि चले प्रभु वनको॥ त०॥
पिता वचन परमाण करे हैं धनुषबाण लियो करमें
जब रथ हांकि दियो स्वामि वन
कहँ आनँद भयो माता कैकयी मनको॥ त०॥
माता कौसल्या शोच करती है बैठी अपने मनमें
सीता मोंहि अतिप्यारी लगत है
प्राण वसत मोरे लक्ष्मण तनमें॥ त०॥३॥

राग सोरठ

रामहो कोंन जतन घर रहिहौं
बार बार भरि अंक गोद ले लालन कोनसो कहिहौं॥ टेक॥
इहि आंगन विहरत मेरे बारे तुम जो संग शिशु लीन्हें॥
कैसे प्राण रहत सुमिरत सुत बड विनोद तुम कीन्हें॥ रामहो०॥

जिन श्रवणन कल वचन तिहारे सुनति रहौं अनुरागी।।
तिन श्रवणन बन गमन सुनति हौं मोते कवन अभागी।।रामहो०।।
युगसम निमिष जाहिं रघुनंदन वदनकमल बिनु देखे।।
जो तनु रहै वदन दीखे बिनु कहा प्रीति इहि लेखे।।रामहो०।।
तुलसीदास सदा प्रेमवश श्रीहरि देखि विकल महतारी।।
गदगद कंठ नैन जलभर फिरि आवन कह्यो मुरारी।।रामहो०।।४।।

(इसी समय सीताजी स्वामी से वनगमन हेतु कहती भईं तब रामचन्द्र समझावते भये)

रहहु भवन हमरे कहे भामिनि।। टेक।।
सादर सासु चरण सेवहु नित जो
तुम्हरे अति हित गृह स्वामिनि।। रहहु०।।
राजकुमारि कठिन कंटक मग
क्यों चलि हो मृदपद गजगामिनि।। रहहु०।।
दुसह वात वर्षा हिम आतप
किमि सहिहो अगणित दिन यामिनि।। रहहु०।।
हौं पुनि पितु आज्ञा प्रमाण करि
एहैं वेगि सुनहु द्युति दामिनि।। रहहु०।।
तुलसिदास प्रभु विरहवचन सुनि
सह न सकी मूर्च्छित भइ भामिनि।। रहहु०।।५।।

मैं तुमसों सति भाव कही है ।।टेक।।
बूझति और भांति भामिनि कत कानन कठिन कलेश सही है।। मैं।।
जो चलि हौ तो चलो वेगि वन सुनि सियमन अवलंब लही है।।
बूडत विरह वारिनिधि मानहुँ नाह वचन मिस बांह गही है।। मैं।।

प्राणनाथ के साथ चली उठि अवध शोक सागर उमहि है।।
तुलसी सुनु न कबहुँ काहू कहुँ तनु परिहरि परछाँह रही है।।६।।

सखियों के प्रति जानकीजी कहती है।

कृपानिधान सुजान प्राणपति संग विपिन हो आऊँगी।। टेक।।
गृहते कोटि भांति सुख मारग चलत साथ सचु पाऊँगी।।कृपा०।।
थाके चरणकमल चापूंगी श्रम भये पवन डुलाऊँगी।।कृपा०।।
नयन चकोरनि मुखमयंक छबि सादर पान कराऊँगी।।कृपा०।।
जो हठि नाथ साथ नहिं लेहैं तौ संग प्राण पठाऊँगी।।कृपा०।।
तुलसिदास प्रभु बिन जीवन रहै क्यों फिर बदन दिखाऊँगी।।७।।

श्रीरामचन्द्रजी जब रथ हांक के सरयू के तट से गंगा किनारेपर आये और केवट से शीघ्र पार उतारने को कहा उस समय केवट बोला।

सवैया

नाम अजामिलसे खल तारे अपार नदी भव बूडत काढे।
जो सुमिरे गिरिमेरु शिलाकण होत अजाखुर वारिधि बाढे।।
तुलसी जेहि के पदपंकजते प्रकटी तटिनी रजसे अघ गाढे।
ते प्रभु या सरिता तरिबे कहँ माँगत नाव करार ह्वै ठाढे।।८।।

कवित्त

जिनको पुनीत वारि शिरसि वहै पुरारि
त्रिपथगामिनी अस वेद कहै गायकै।।
जिसको योगीन्द्र मुनि वृन्द देव देहधरि
करत विविध योग जप मन लाय कै।।
तुलसी जिन चरणनकी धूरि छू अहल्या तरी
गौतम सिधारे गृह गौनसो लिवायकै।।

तेई पाँय पायकै चढावों नाव धोये
बिन ख्वेहौं न पठावनी कहै हो न हँसायकै॥९॥
प्रभुरुख पायकै बुलाय बाल घरीतहिं,
बंदिके चरण चहुँ दिशि बैठे घेरिघेरि।
छोटोसो कठौतौ भरि आनि पानी गंगाजूको,
धोय पायँ पियत पुनीत वारि फेरि फेरि।
तुलसी सराहैं ताको भाग सानुरागसुर
वरषैं सुमन जय जय कहैं टेरि टेरि।
विविध सनेह सानी वानी असमानी
सुनि हँसे राघो जानकी लषण तन हेरि हेरि॥

इसके पीछे जब जानकीजी चलीं तब राम से पूंछती भई।

सवैया

तटते जु चलीं रघुवीर वधू धरि धीर दये मगमें पद द्वै।
झलकी भरि मालकनी जलकी पटु सूखि गये मधुराधर द्वै।
फिर बूझत है चलनो जु कितो पिय पर्णकुटी करिहो कित ह्वै।
तियकी लखि आतुरता पियकी अँखियां अतिचारु चलीं चल ह्वै ॥

राग- बिलावल

कहौ सो विपिन है धौं केतिक दूरि ॥टेक॥
जहां गमन कियो कुँवर अवधपति बूझत सिय पिय पतिहि बिसूरि।
प्राणनाथ परदेश पयादेहि चले सुख सकल तजे तृणतूरि।
करौं बयार विलंबि विटपतरि झरिहौं चरण सरोरुह धूरि।
तुलसिदास प्रभु प्रिया वचन सुनि नीरज नयन नीर आये पूरि।
कानन कहां अबहिं सुनु सुंदरि रघुपति फिर चितये तितभूरि॥१२॥

अब भरतजी अपने मामा के इहां से आकर माता से पूंछते भये।

भजन

बूझैं भरत राम कहँ माई ॥ टेक॥
जबते धँस्यो अवधनगरीमें मोहिं उदासी आई।
घर गलियां औ घाट बाट में प्रजा मात मैं रोवत पाई॥ बुझैं०॥
सिया बिना मोरो मंदिर सूनो लक्ष्मण बिन ठकुराई।
राम विना मोरी गद्दी सूनी उलट पछाड़ भरतने खाई॥ बुझैं०॥
कहैं भरत सुनु मात कैकयी यह कह कुमति कमाई।
तुलसीदास आस रघुवरकी इन बातनमें नहीं है भलाई॥१३॥

जननी मैं न जीऊँ विन राम ॥ टेक॥
सूनो भवन सूनो सिंहासन उन बिन कछु न सुहान॥ जननी०॥
राम औ लक्ष्मण वनको सिधारे दशरथ तजै हैं प्रान॥ जननी०॥
चित्रकूटको चलूं री माता वहीं जो मिलैं दोउ भ्रात॥ जननी०॥
तुलसीदास आश रघुवरकी हरिचरणोंपर धरहु रे ध्यान॥ १४॥

भाई हौं अवध कहा रहि लहहौं ॥ टेक॥
रामलषण सिय चरण विलोकन काल्हि काननहिं जैहौं॥ भाई०॥
यद्यपि मोते कै कुमातुते ह्वै आई अति पोची।
सन्मुख गये शरण राखहिंगे रघुपति परम सँकोची॥ भाई०॥
तुलसी यों कहि चले भोरही लोग सकल सँग लागे।
जनवन जरत देखि दारुणदव निकसि विहँग मृग भागे॥१५॥

रघुपति मोहि संग किन लीजै ॥ टेक॥
बारबार पुर जाहु नाथ केहि कारण आयसु दीजै ॥ रघु०॥
यद्यपि हौं अति अधम कुटिल मति अपराधिनिको जायो।

प्रणतपाल कोमल स्वभाव जिय जानि शरण तकि आयो।। रघु०।।
जो मेरे तजि चरण आनगति कहौं हृदय कछु राखी।
तौ परिहरहु दयालु दीन हित प्रभु अभि अंतर साखी।। रघु०।।
ताते नाथ कहौं मैं पुनि पुनि प्रभु पितु मातु गोसाईं।
भजनहीन नर देह वृथा खर श्वान फेरुकी नाईं।। रघु०।।
बन्धुवचन सुनि श्रवण नयन राजीव नीर भरि आये।
तुलसिदास प्रभु परमकृपा गहि बांह भरत उर लाये।।रघु०।१६।।

काहे को मानत हानि हिये हौ ।। टेक।।
प्रीति नीति गुण शील धर्म कहँ तुम अवलंब दिये हौ।। काहे०।।
तातजात जानिबो न ये दिन करि प्रमाण पितु वानी।
ऐहौं वेगि धरहु धीरज उर कठिन कालगति जानी।। काहे०।।
तुलसिदास अनुजहिं प्रबोधि प्रभु चरणपीठ निज दीन्हें।
मनहुँ सबनिके प्राणपाहरू भरत शीश धरि लीन्हें।। काहे०।१७।।

जबते चित्रकूटते आये ।
नंदिग्राम खनि अवनि डासि कुश पर्णकुटी करि छाये।। टेक।।
अजिन वसन फल अशन जटा धरे रहत अवध चित दीन्हें।।
प्रभुपद प्रेम नेमव्रत निरखत मुनिन नमित मुख कीन्हें।।जबते०।।
सिंहासनपर पूजि पादुका बारहिं बार जुहारे।।
प्रभु अनुराग मांगि आयसु पुरजन सब काज सँवारे।।जबते०।।
तुलसी ज्यों ज्यों घटत तेज तनु त्यों त्यों प्रीति अधिकाई।।
भए न हैं न होहिंगे कबहूँ भुवन भरतसे भाई ।। जबते०।।१८।।

इति श्री भजन रामायणे अयोध्याकाण्ड समाप्त।



अथ भजनरामायणे आरण्यकाण्डम्

किरातनी बोली

ए उपही कोउ कुँवर अहेरी ।। टेक।।
श्याम गौर धनुबाण तूणधर चित्रकूट अब आय रहे री।।ए उप०
इनहिं बहुत आदरत महामुनि समाचार मेरे नाह कहे री।।ए उप०
वनिता बंधु समेत वसत वन पितुहित कठिन कलेश सहे री।।ए उप०
वचन परस्पर कहत किरातिनि पुलक गात जल नयन बहे री।।ए उप०
तुलसी प्रभुहि विलोकत इकटक लोचन जनु बिनु पलक लहे री।।१।।

भजन वनवास के

बनही में जा हरिने कुटि रे बनाई ।। टेक।।
भोजपत्रकी बनी है कुटिया चंदन वल्ली लगाई।
हरियर वारी बोइ दई है जा दिनसे मृग चुग चुग जाई।।बन०।।
राम औ लक्ष्मण मिलिकै बैठे सीता बात सुनाई।
हरियल वाडी मृगा चुग गयो मृगाकी छाल मेरे मन भायी।।बन०।।
इतना वचन सुनि रामचन्द्रने मृगाकी गैल दबाई।
धनुषबाण लिये गैलमें ठाढे चौकस रहना मेरे लक्ष्मण भाई।।बन०।।
दूरमें जाइ मृगाको मारो हाहाकार सुनाई।
सीताजी तब यों उठि बोली अपने वीरनकी लक्ष्मण करौ सहाई।।बन०।।
मृगा मारि राम घर आये सुनी मड़ैया पाई।
तुलसीदास आश रघुवरकी सियाको बतादे मेरे लक्ष्मण भाई।।२।।

प्रेमकुटीमें जा योगीने अलख जगायो ॥ टेक॥
अलख अलख योगी खड़ो पुकारै सीताने सुनि पायो॥
हट जा योगी मेरे आगेसे नहिं तेरो काल हरिहाथसे आयो॥प्रेम०॥
बारह वर्ष वनखंडमें बीते तेरो पार नहिं पायो,
झोली लेके मांगन निकस्यो जलको प्यासो रानी तेरे द्वार आयो॥प्रेम०॥
इतना कहि आसन तहँ मास्यो योगीने नाद बजाई,
सीता सुनिबेको बाहर आई तब योगी मन अधिक हर्षाई॥प्रेम०॥
तुलसीदास आश रघुवरकी हरिचरणन बलिहारी,
सीता पकरि झोलीमें डाली फिर योगी लंकामें आई ॥प्रेम०॥३॥

भाई लक्ष्मण सीताको कौने हरी॥ टेक॥
गिरिवर चढिके सागर देखो नहीं कहीं जल भरनको गई री॥भाई॥
उडि उडि कागा मंदिरपर बैठे सूनी मडैया परी॥भाई॥
की हरि लियो लंकापति रावण की कहुँ सिंहने भखी॥भाई॥
तुलसिदास आश रघुवरकी बनही में विपत परी॥भाई॥४॥

पद

आरत वचन कहत वैदेही ॥ टेक॥
विलपति भूरि बिसूरि दूर गये मृग सँग परम सनेही॥आरत०॥
कहे कटु वचन रेख नांघी मैं तात क्षमा सो कीजै,
देख वधिक वश राज मरालिन लषणलाल क्षमिलीजै॥आरत०॥
वन देविन सिय देखि कहति यों छलकर नीच हरी हौं,
डोमरकर सुरधेनु हाथ ज्यों त्यों पर हाथ परी हौं॥आरत०॥
तुलसिदास रघुनाथ नाम धुनि अकनि गीध धुकि धायो,
पुत्रि पुत्रि जनि डरे न जैहै नीच मीच है आयो ॥आरत०॥५॥

गीधराज कहता है

मेरे एको हाथ न लागी ।। टेक।।
गयो वपु बीच वादि कानन ज्यों कल्पलता दवदागी।। मेरे०।।
दशरथसों न प्रेम प्रतिपाल्यो हतो सकल जग साखी।
बरबश हरत निशाचर पतिसों हठि न जानकी राखी।। मेरे०।।
मरत न मैं रघुवीर विलोके तापसवेष बनाये,
चाहत चलन प्राण पामर बिन सिय सुधि प्रभुहिं सुनाये।। मेरे०।।
बार बार कर मींज शीश धुनि गीधराज पछिताई,
तुलसी प्रभु कृपालु तेहि अवसर आय गये दोउ भाई।।मेरे०।६।।

पद

मेरे जान तात कछुक दिन जीजै।। टेक।।
देखिये आप सुवन सेवा सुख मोंहि पितुको सुख दीजै।। मेरे०।।
दिव्यदेह इच्छा जीवन जग विधि मनाय मांगि लीजै।
हरिहर सुयश सुनाय दरश दे लोग कृतारथ कीजै।। मेरे०।।
देखि वदन सुनि वचन अमिय तन राम नैन जल भीजै।
बोल्यो विहँग वचन रघुवर बलि कहौं सुभाय पतीजै।। मेरे०।।
मेरे मरिबे सब न चारि फल होहिं तौ क्यों न कहीजै,।
तुलसी प्रभु दियो उत्तर मौनही परी मानो प्रेम सहीजै।। मेरे०।।७।।

।। इति आरण्यकाण्ड ।।

*****

भजन रामायणे किष्किन्धाकाण्डम्

जब श्रीरामचन्द्रजी किष्किन्धा पर्वतपर आये तब सुग्रीव के दिये हुए जानकी के भूषण देखते भये।

कवित्त

अमल अमोल गोलकुण्डल प्रकाशमान,
कोऊ ऐसो दरशत राज भामिनीको है।
तैसेही अमन्द भुजबन्द चन्दते दुचन्द,
दीपति सुदिव्य दुतिहारी दामिनीको है॥
परम पुनीतपद भूषण अनूप चारु,
पूजनीय संतत त्रिलोक नामिनीको है।
रसिकबिहारी और नाहि पहिचाने एक जाने
यह नूपुर हमारी स्वामिनीको है॥१॥

राग- केदार

भूषण वसन विलोकत सियके॥ टेक॥
प्रेमविवश मनमें पुलकित तनु
नीरजनयन नीर भरे पियके॥ भूषण०॥
सकुचत कहत सुमिरि उर उमँगत
शील सनेह सुगुण गुण तियके॥ भूषण०॥
स्वामि दशा लखि लषण सखा कपि
पघिले हैं आंच माठ मानो घियके॥ भूषण०॥२॥

राग- केदार

प्रभु कपिनायक बोलि कह्यो है ।। टेक।।
वर्षा गई शरद आई अब नहिं तिय शोधु लह्यो है।।प्रभु०।।
जा कारण तजि लोग लाज तनु राखि वियोग सह्यो है,
ताको तो कपिराज आज लग कछु न काज निबह्यो है।।प्रभु०।।
सुनि सुग्रीव सभीत नमित मुख उतरु न देत चह्यो है,
आइ गये हरि यूथ देखि उर पूर प्रमोद रह्यो है।।प्रभु०।।
पठये वदि वदि अवधि दशहुँ दिशि चले बल सबनि गह्यो है,
तुलसी सिय लगि भव दधिनिधि मानो फिरि हरि चहत मह्यो है ।।३।।

इति भजनरामायणे किष्किन्धाकाण्ड समाप्त

*****

अथ भजनरामायणे सुन्दरकाण्डम्

सवैया

एकहि बेर कहौं सु कहैं कहिकै पुनि औरको और न भाखौं।
कोनी कृपा जेहिपै तेहिपै अपराध निहारि न रंजहु माखौं।।
जाहि लिये गहिकै अपनाय तिन्हैं रसिकेश न भूलिहु नाखौं।
लाओ कपीश विभीषणको करि देऊँ अभय शरणागत राखौं।।१।।

राग- केदार

रजायसु रामको जब पायो ।। टेक।।
गाल मेलि मुद्रिका मुद्रित मन पवनपूत शिर नायो ।।रजा०।।
भालुनाथ नल नील साथ चले बली बालिको जायो,
फरकि सुअंग भये शकुन कहत मानो मग मुद मंगल छायो ।।रजा०।।

देखि विवरु सुधि पाय गीधसों सबनि अपनो बल गायो,
सुमिरि राम तकि तरकि तोयनिधि लंक लूकसो आयो ।।रजा०।।
खोजत घर घर जनु दरिद्रमणि फिरत लागि धन धायो,
तुलसी सिय विलोकिके पुलक्यो भूरि भाग्य भयो भायो ।।२।।

राग- केदार

हौं रघुवंशमणिको दूत ।। टेक।।
मातु मानु प्रतीति जानकि जानि मारुत पूत।। हौं रघु०।।
मैं सुनी बातैं अनैसी जे कही निशिचर नीच,
क्यों न मोरे गाल बैठो काल डाढनि बीच।। हौं रघु०।।
निदरि अरि रघुवंशमणि लै जाउँ जो हठि आज,
डरौं आयसु भंगते अरु बिगरि है सुरकाज।। हौं रघु०।।
बांधि वारिधि साधि रिपु दिन चारिमें दोउ बीर,
मिलहिं गे कपि भालु संगे जननि धरु धीर।। हौं रघु०।।
चित्रकूट कथा कुशल कहि शीश नायो कीश,
सहृद सेवक नाथ लखि दई अचल अशीश।। हौं रघु०।।
भये शीतल श्रवण तनु मन सुने वचन पीयूष,
दास तुलसी रही नयननि दरशहीकी भूख।। हौं रघु०।।३।।

सदल सलषण हैं कृपालु कौशल राउ।। टेक।।
शीलसदन सनेह सागर सहज सरल सुभाउ।
नींद भूषणदेवर हि परि हरेको पछिताउ।। सदल०।।
धीरधुर रघुवीरको नहिं सपनेहुँ चित चाउ।
सोध बिनु अनुरोध ऋतुको बोध विहित उपाय।। सदल०।।
कहत है सोइ समैं साधन फलत बनत बनाउ।। सदल०।।

पठै कपि दिशि दशहुँ जे प्रभु काजकु टलन काउ।
बोलि लियो हनुमान करि सनमान जानि समाउ॥ सदल०॥
दई हो संकेत कहि कुशलात सियहि सुनाउ।
देखि दुर्ग विशेष जानकी जानि रिपु गति आउ॥ सदल०॥
कियो सीय प्रबोध मुँदरी दियो कपिहि लखाउ।
पाय अवसर नाइ शिर तुलसी सगुण गुण गाउ ॥ सदल०॥४॥

राग- केदार

कबहुँ कपि राघव आवहिंगे ॥ टेक॥
मेरे नयन चकोर प्रीतिवश राका
शशि मुख दिखरावहिंगे॥ कबहुँ०॥
मधुप मराल मोर चातक है
लोचन बहुप्रकार धावहिंगे,
अंग अंग छबि भिन्न भिन्न मुख
निरखि निरखि तहँ छावहिंगे॥ कबहुँ०॥
बिरह अगिनि जरि रही लता
ज्यों कृपादृष्टि जल पलु हावहिंगे
निज वियोग दुख जानि दयानिधि
मधुर वचन कहि समझावहिंगे॥ कबहुँ०॥
लोकपाल सुर नाग मनुज सब
परे वंदि कब मुकतावहिंगे।
रावण वध रघुनाथ विमल यश
नारदादि मुनिजन गावहिंगे॥ कबहुँ०॥
यह अभिलाष रैनि दिन मेरे
राज्य विभीषण कब पावहिंगे,
तुलसीदास प्रभु मोह जनित भ्रम भेद
बुद्धि कब बिसरावहिंगे॥ कबहुँ०॥५॥

श्रीजानकीजी के पास जाकर विभीषण अपनी विपत्ति सुनाते भये

जाय माय पांयपरि कथा सो सुनाई है।। टेक।।
समाधान करति विभीषणको बार बार
कहा भयो तात लात मारो बडो भाई है।। जाय०।।
साहिब पितु समान यातुधानको तिलक
ताके अपमान तेरी बडिय बडाई है।। जाय०।।
करत गलानि यानि सनमानी सिख देत
रोख किये दोष सहे समुझे भलाई है।। जाय०।।
इहांते विमुख भये रामकी शरण गये
भलो नेकु लोक राखे निपट निकाई है।। जाय०।।
मातु पग शीश नाइ तुलसी अशीश पाइ
चले भले शकुन कहत मन भाई है।। जाय०।।६।।

श्रीरामचन्द्रजी ने जब बिभीषण के आने की खबर पाई तब हनुमानजी से कहते भये

हिय बिहँसि कहत हनुमानसों ।। टेक।।
सुमति साधु शुचि सुहृद बिभीषण बूझि परत अनुमान सों ।।हिय।।
हौं बलिजाहुँ और को जानै कह कपि कृपानिधानसौं ।।हिय।।
छल न होय स्वामी सन्मुख ज्यों तिमिर सात हय जानसों ।।हिय।।
खोटो खरो सभीत पालिये सो सनेह सनमानसों ।।हिय।।
तुलसी प्रभु कीबो जो भलो सोइ बूझि शरासन वानसों ।।७।।

नाहिंन भजिबे योग वियो ।। टेक।।
श्रीरघुवीर समान आनको पूरण कृपा हियो।।नाहिंन०।।
कहौ कौन सुर शिला तारि पुनि केवट सुमति कियो।
कौन गीध अधमको पितु ज्यों निजकर पिण्ड दियो।।नाहिंन०।।

कौन देव शबरीके फल करि भोजन सलिल पियो।
बालि त्रास वारिधि बूड़त कपि तेहि गहि बांह लियो।।नाहिंन०।।
भजन प्रभाउ विभीषण भाष्यो सुनि कपि कटक जियो।
तुलसिदासको प्रभु कोशलपति सब प्रकार वरियो ।।नाहिंन०।।८।।

इति भजनरामायणे सुन्दरकाण्ड समाप्त

*****

अथ भजनरामायणे लंकाकाण्डम्

अंगद रावण से कहत भयो

राग- कान्हरा

तू दशकंठ भले कुल जायो।। टेक।।
तामहँ शिवसेवा विरञ्चिवर भुजबल
विपुल जगत यश पायो।। तू दश०।।
खरदूषण त्रिशिरा कबंध रिपु
जेहि वाली यमलोक पठायो,
ताको दूत पुनीत चरित हरि
शंभु सँदेश कहन हौं आयो।। तू दश०।।
श्रीमद नृप अभिमान मोहवश
जानकि अनजानत हरि लायो,
तजि व्यलीक भुज कारुणीक प्रभु दै
जानकिहि सुनहि समुझायो।। तू दश०।।
याते तब हित होइ कुशल कुल
अचल राज चलि है न चलियो,

ना हित रामप्रताप अनल महँ ह्वै
पतंग परिहै शठ धायो॥ तू दश०॥
यद्यपि अंगद नीति परम हित कह्यो
तथापि न कछु मन भायो,
तुलसिदास सुनि वचन क्रोध अति
पावक जरत मनहु घृत नायो॥ तू दश०॥१॥

तैं मेरो मरम कछू नहिं पायो॥ टेक॥
रे कपि कुटिल पीठ पशु पांवर
मोहिं दास ज्यों डांटन आयो॥ तैं०॥
भ्राता कुम्भकर्ण रिपु घातक
सुत सुरपतिहि बंदि करि लायो,
निज भुजबल अति अतुल कहों
क्यों कन्दुक ज्यों कैलास उठायो॥ तैं०॥
सुरनर असुर नाग खग किन्नर
सकल करत मेरो मन भायो,
निशिचर रुचिर अहार अनुज तनु
ताको यश खल मोहिं सुनयो॥ तैं०॥
कहां भयो वानर सहाय मिलि
करि उपाय जो सिन्धु बंधायो,
जो तरि है भुजबास घोर निधि
ऐसो को त्रिभुवनमें जायो॥ तैं०॥
सुनि दशशीश वचन कपि कुंजर
बिहँसि ईश मायहि शिर नायो,
तुलसिदास लंकेश कालवश
गनत न कोटियतन समुझायो॥ तैं०॥

सियाजीसे मिलन मंदोदरि आई ।। टेक।।
सीता मिलन मंदोदरी आई संग सहेली लाई
नौलख जोड़ चूनरी झिलमिल करत बागमें आई।।सिया।।
सीता बेटी जनकरायकी शिवधरने धरलाई,
जब शिवधरने लई उजारी नौलख ताराकी किरण छिपाई।।सिया।।
हाथ जोरिकै खडी मंदोदरी उत्तम बात सुनाई,
तू तो सतकी सीता कहिये मेरे बालकके रानीकी विधि आई।।सिया।।
तुलसिदास आश रघुवरकी हरिचरणन बलिहारी
देवन केरी बंदि छुड़ाऊँ तोहिं रँड़ापो बहिन देनेको आई।।सिया।।३।।

क्या कुमति कमाई बालम सीताहरि लाये।। टेक।।
तुम तो कहौ न सँग दल उनके अब फौजें ले आये,
हाय कंत दोनों ना छेडो वे दोउ सुत दशरथके जाये।। क्या०।।
राम लषण दशरथके छौना वे चढ़िकै अब आये,
सांची कहौं स्वामि मैं तुमसे वे हैं पुत्र ब्रह्मासे वर पाये।। क्या०।।
कहै मंदोदरी सुन पिय रावण सांचो स्वप्ना आयो,
तेरी लंकामें वानर कूदे लक्ष्मण योधाने बाण चलायो।। क्या०।।
तुलसीदास आश रघुवरकी हरिसे ध्यान लगायो,
भय्या तेरो भक्त बिभीषण यह प्रभुसे स्वामी जाय बतरायो।।४।।

ब्रह्मपुरीको राम पधारे ।। टेक।।
ब्रह्माजीके द्वारे जाके ठाकुरजी ललकारे,
शक्तिबाण हमैं तुम देइदेउ लंका युद्ध मचा मेरे वारे।।ब्रह्मा०।।
ब्रह्माज्ञानी यों उठि बोले मानो वचन हमारे,
शक्तिबाण वही था मेरे सो ले गयो गढलंका वारे।।ब्रह्मा०।।

इतना वचन जब सुना रामने सोच किया बडभारी,
बुरा किया तैंने शक्ती दीन्हीं मारे जायँगे भ्रात हमारे॥ब्रह्मा०॥
इतना वचन सुना ठाकुरने अक्षर लिख दिये कारे,
तुलसीदास आश रघुवरकी शक्तिके वचन टरैं नहिं टारे॥५॥

जब श्रीलक्ष्मणजी को शक्ति लगी तब श्रीरामचन्द्रजी लक्ष्मण को हृदय में लगा लेते भये।

राग- केदार

रामलषण उरलाय लये हैं ॥ टेक॥
भरे नीर राजीवनयन सब अंगपर ताप तये हैं,
कहत सशोक बिलोकि बन्धुमुख वचन प्रीतिगथये हैं॥रामल०॥
सेवक सखा भगतिभायपगुण चाहत अब अथये हैं,
निज कीरति करतूति तात तुम सुकृती सकलजये हैं॥रामल०॥
मैं तुम बिन तनु राखि लोक अपने अपलोक लये हैं,
मेरे प्राणकी लाज यहां लौं हठि प्रिय प्राण दिये हैं॥रामल०॥
लागति सांगि बिभीषणही पर सीपर आयु भये हैं,
सुनि प्रभु वचन भालु कपिगण सुर सोच सुखाइ गये हैं॥रामल०॥
तुलसी आय पवनसुत विधि मानो फिर निरमये नये हैं ॥रामल०॥६॥

लागो है बाणकोही लक्ष्मण जायो॥ टेक॥
रामने दलमें वीरा डारो
बीरा कोइ नहिं खायो,
अञ्जनीपुत्र रामके पायक
भरी सभामें बीरा जाय चबायो॥ लागो०॥

बीरा खाकै चले पवनसुत
पर्वतपुरको धायो,
खबर भई जब असुर नगर में
बीच बजार रावणने लगायो॥ लागो०॥
सारी रैन बजारमें बीती
परभाते उठि धायो,
जब सुधि लईहै लक्ष्मणजीकी
हाथ जोडे भय्या रुदन मचायो॥ लागो०॥
पर्वत पर्वत फिरै पवनसुत
मूल हाथ नहिं आयो,
सारो पर्वत जरतो देखोसो
कर पै धर लायो॥ लागो०॥
लैके सजीवन चले पवनसुत
रामदलहिमें आयो,
राम मिले लक्ष्मणहूँ जागे
तुलसिदास हरिके गुण गायो॥ लागो०॥७॥

कौतुकही कपिकु धर लियो है ॥ टेक॥
चल्यो नभ नाइ माथ रघुनाथहि सरिस न वेग वियो है॥कौ०॥
देख्यो जात जानि निशिचर बिनु फर शर हयो हियो है,
पर्‍यो कहि राम पवन राख्यो गिरि पुर तेहि तेज पियो है॥कौ०॥
जाइ भरत भरि अंक भेटिं निज जीवनदान दियो है,
दुख लघु लषण मरम घायल सुनि सुख बडो कीश जियो है॥कौ०॥
आयसु इतति स्वामिसंकट उत परत न कछू कियो है,
तुलसिदास विहर्‍यो प्रकाशसों कैसेकै जात सियो है॥कौ०॥८॥

अब भरतादि बहुत दुःख करते भये

सुनि रण घायल लषण परे हैं ॥ टेक॥
स्वामिकाज संग्राम सुभट सौ लोहे ललकारि लरे हैं॥ सु०॥
सुवन शोक संतोष सुमित्रहि रघुपति भगति वरे हैं,
छिन छिन मातु सुखाति छिनहिं छिन हुलसत होत हरे हैं॥ सु०॥
कपिसों कहति सुभाय अंबके अंबक अंबु भरे हैं,
रघुनन्दन बिनु बन्धुकु अवसर यद्यपि धनु दुसरे हैं॥ सु०॥
तात जाहु कपि सँग रिपुसूदन उठि कर जोरि खरे हैं,
प्रमुदित पुलकि नैन परे जनु विधिवश सुढर ढरे हैं॥ सु०॥
अंब अनुज गति लखि पवनज भरतादि लानि गरे हैं,
तुलसी सब समुझाय मातु तेहि समय सचेत करे हैं॥ सु०॥९॥

बैठि शकुन मनावति माता ॥ टेक॥
कब ऐ हैं मेरे बालकुशल घर कहहु कागफुरि बाता॥ बैठि०॥
दूधभातकी दोनी देहौं सोने चोंच मढै हौं,
जब सिय सहित विलोकि नयनभरि रामलषण उर लैहौं॥ बैठि०॥
अवधि समीप जानि जननी जिय अति आतुर अकुलानी,
गणक बोलाय पांय परि पूँछति प्रेम मगन मृदुबानी॥ बैठि०॥
तेहि अवसर कोउ भरत निकटते समाचार लै आयो,
प्रभु आगमन सुनत तुलसी मनो मीन मरत जल पायो॥बैठि०॥१०॥

आजु अवध आनन्द बधावन रिपु रण जीत राम आये॥ टेक॥
सजि सुविमान निशान बजावत मुदित देव देखन धाये
घर घर चारु चौक चन्दन मणि मंगलकलश सबनि साजे,
ध्वज पताक तोरण वितानवर विविध भांति बाजन बाजे॥आजु०॥

राम तिलक सुनि द्वीप द्वीपके नृप आये उपहार लिये,
सिय सहित आसीन सिंहासन निरखि जोहारत हरष हिये।।आजु०।।
मंगलगान वेदध्वनि जयध्वनि मुनि अशीष धुनि भुवन भरे,
वरषि सुमन सुर सिद्ध प्रशंसत सबके सब संताप हरे।।आजु०।।
रामराज भईकामधेनु महि सुख संपदा लोक छाये,
जनम जनम जानकीनाथके गुणगण तुलसिदास गाये।।आजु०।।११।।

अथ भजनरामायणेलंकाकाण्ड समाप्त।

*****

अथ भजनरामायणे उत्तरकाण्डम्

राग- ललित

भोर जानकी जीवन जागे ।। टेक।।
सूत मागध प्रवीण वीणा धुनि द्वारे गायक सरस रागरागे।।भोर०।।
श्याम सलोने गात आलसवश जँभात प्रिया रस पागे
उनीदे लोचन मुख चारु सुखमा शृंगार हेरि हारे मार भूमि भागे।।भोर०।।
सहज सुहाई छबि उपमा न लहै कवि मुदित विलोकन लागे
तुलसीदास निशिवासर अनूपरूपरहत प्रेम अनुरागे ।।भोर०।।१।।

आरती श्रीरामायणजीकी

कीरति कलित ललित सिय पियकी ।। टेक।।
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, वाल्मीकि विज्ञान विशारद
शुक सनकादि शेष अरु शारद, वरणि पवनसुत कीरति नीकी।।आ०।।
संतत गावत शंभु भवानी, औ घटसंभव मुनि विज्ञानी
व्यास आदि कवि पुंग बखानि, काकभुशुण्ड गरुड़के हियकी ।।आ०।।

चारों वेद पुराण अष्टदश, छहौं शास्त्र सब ग्रंथनको रस,
तन मन धन सन्तनको सर्वस, सार अंश सम्मति सबहीकी।।२।।

श्रीरामचन्द्रजी की स्तुति

वन्दौं चरणकमल रघुनन्दन ।। टेक।।
जिनकी कृपा सकल सुख संपति पावत जन भक्तन उर चंदन।।
अवधपुरीमें नित्य विराजत जनकसुतायुत दुष्टनिकन्दन।।वं०।।
तीन ताप अरु जन्म मरण भव दूर करत छिनमें मनरंजन।।
मिश्र नमत चरणनमें भगवत कृपा करो सेवक भयभंजन ।।वं०।।१।।

समझ मन अगम निगमकी बानी ।। टेक।।
आंखी मीचके देखो जगको लग रहि ऐंचा तानी।
अपने अपने स्वारथके हित प्रीति करे परमानी।।१।।
कहांते आया कहां बिलमाया कौन पुरुष पहिचानी।
घर है बडा मुसाफिरखाना छांह चलेगा पानी।।२।।
मात पिता भामिनी मित्र ये धन विन खैंचे कानी।
तेरे गये शोच ना करिये समझ शोच शैलानी।।३।।
हे मन गाव राम सीताको अयोध्या धाम राम रजधान।
भगवानदास मनको समुझावो ज्ञान ध्यान मन आनी।।४।।२।।

हे मन रामनाम गुण गावो ।। टेक।।
बालापन खेलन बिच खोवो ज्वानीमें गर्वावो ।
देखि बुढापो कालरावजी अपनी फौज पठायो।।१।।
जो तू कहै कुटुम्ब है मेरो चलत नजर नहिं आवो।
आया अकेला जाय अकेला मिट्टीमें मिल जाओ।।२।।

तेरी कंचनकी नगरीमें भारी लूट मचाओ।
कफ खांसी सावत मत ब्रह्मा आपन हुकुम जमावो।।३।।
धन औरत पुत्र और नौकर कोई काम न आओ।
भगवानदास रामके भजन बिन पाछेसे पछितावो।।४।।३।।

काहूके कुल नाहिं विचारत ।। टेक।।
अविगतिकी गति कहौ कौनसो पतित सबनको तारत।।१।।
कौन जाति को पांति विदुरको जिनके प्रभु व्योहारत।।२।।
भोजन करत तुष्टि घर उनके राज मान मद टारत।।३।।
ओछे जन्म कर्मके ओछे ओछोही बोलावत।।४।।
अनत सहाय सूरके प्रभुकी भक्तहेतु पुनि आवत।।५।।४।।

हे मन अबसे करहु खयाल।। टेक।।
जिनको तुमने भाई समझे ते तुहिं जानैं काल।
काम क्रोध मद लोभको त्यागो यह तन करिके जाल।।१।।
मनको धोवो मन मतवाला क्यों धोवत हौ खाल।
पलक उठायके देखो रे मनुवां छोडहु चाल कुचाल।।२।।
जैसे गये तेरे बाप दादा छोड सब धन माल।
वैसेही एक दिन जायगा तू जगतका यह हाल।।३।।
कहे भगवानदास समझो सभी यह भक्त मायाजाल।
नाम नारायण जपो रे मनुवां जो कालहुको काल।।४।।५।।

हे प्रभु कीजै जगमें पार।। टेक।।
क्षमा करहु अपराध नाथ विनती अब वार।
मैं मतिमन्द मलीन दीन तुम सोच विमोचन हार।।१।।

मैं खल कामी कुटिल कलिमली तुम प्रभु विपति विदार।
मैं अघखानि विषय अनुरागी तुम विषयन मदमार॥२॥
मैं पामर अति पतित मलायन तुम पावन पतित उबार।
अहोनाथ मम ओर कृपाकी कोर करहु श्रीकृष्ण मूरार॥३॥
कठिन कराल जाल मायाने रचकर किया तैयार।
भगवानदास जोरि कर ठाढे अब प्रभु सुनहु पुकार॥४॥६॥

हे मन क्यों न जपत गिरिधारी॥ टेक॥
चार दिनाको यह तनु पायउ बटोरि धरेउ धन भारी।
यह धन सब कछु काम न आवे छांडि चलोगे पसारी॥१॥
मात पिता औ भाई भगिनी सब छूठा संसारी।
काम क्रोध मद लोभको त्यागो जपहु कृष्ण मुरारी॥२॥
जब जब भीर परी तन ऊपर तब प्रभु लेत सँभारी।
हरिको छोडि कुमारग धायउ फिर दुख पायो भारी॥३॥
बारम्बार तोहि समुझाओ क्यों सोवो पांव पसारी।
भगवानदास रामभजन विन यमदूत मारें ललकारी॥४॥७॥

हे मनु सुनहु बात हमारी॥ टेक॥
जनमतही ते आयु घटत है सब कहत अबै सुतबारो।
लागत प्यारो बढ़ता ज्यो ज्यो यह बदन सँबारो॥१॥
वृद्धापन जब आयो तेरा डोकरा कह कह सबन पुकारो।
यह सब जानो न जानो रे मनुवां यह तो कालको चारो॥२॥
बालूके मंदिरमें रहकर हुकुम चलाओ हजारों।
वृक्षकी छाया यही तनु जानो पलक उठाय निहारो॥३॥
दिन दिन पालत पोषत यह तनु छनमें होत जु छारो।
भगवानदास आश रघुवरकी अबकी बार उबारो॥४॥८॥

करता कर्मरेखसे न्यारा।। टेक।।
संकट योनिन बहुरि न आवै नहीं लेत अवतारा।।१।।
ना वह मरै न काहू मारै है जग सिरजन हारा।।२।।
जिसको निगम पार नहिं पावै बकि बकि मरत गँवारा।।३।।
कहै कबीर सुनो भाई साधो निर्गुण साहब हमारा।।४।।९।।

जन्म सिरानें अटके अटके।। टेक।।
सुत सम्पति गृह राज मानके फिर अनाथ ही भटके।।१।।
कठिन जवनिका रचो मोहकी तोरी तो न जाय चटके।।२।।
ना हरिभजन न तृप्ति विषय करि रह्यो बीच ही लटके।।३।।
सब जंजाल सु इन्दजाल सम ज्यों बाजीगर नटके।।४।।
सूरदास शोभा न शोभियत पिय बहु धन धन मटके।।५।।१०।।

मोर तोर मन यों कैसे एक होय रे।। टेक।।
तुम तो कही कागज देखे हम कही आँखिन देखे रे।
हम तो आयन तुमरे दरशन तुम राखेउ अरुझाय रे।।१।।
हम तो कही जागत होइ हो तुम गये सोय रे।
हम जानी निर्मोही होइ हो तुम तो रहेउ मोहि रे।।२।।
जनम युगन तुमको समझायउँ तुम न मानी एक रे।
रहन बीलडी चलन बीलडी ए सब डारौ धोय रे।।३।।
साथ गुरूका निर्मल धारा तेहिमें चोला धोय रे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो इहमां होइ तो होय रे।।४।।११।।

दुलहिन चतुर सयानी साहब घर काहे न गई।। टेक।।
गढ पर्वतपर आय महल बिच छांह गई।
लहंगा घूम घुमावत चोलीं जडाऊ जडी।।१।।

गहना जगकर मोल सोनरवैं खूब गढा,।
तोरे बिछुवनकी झनकारि महल बिच शोर भई।।२।।
तोर आये हैं आनन हार ममीता काहे न कीहे,।
ज्ञान छोड़ असवार निर्भई होइके आवो चली।।३।।
सुखिया है संसार खाय सुख सोवै,।
दुखिया दास कबीर रामगुण गावै।।४।।१२।।

शब्द तोरी पारिख कवन करी।। टेक।।
नेवते पांच पचीसों आयन उनहुँके लगन धरी।।१।।
जाय बरात बरातर उतरी दुलहै यम पकडी।।२।।
दुलहिनके शिरमौर बिराजै दुलहा शिर चुनरी।।३।।
बासी भात बरातिन खावा मड़येमें लहर परी।
कहै कबीर सुनो भाई साधो ईपद बीडैको समुझि परी।।४।।१३।।

सुमिरो नाम काल निज घेरे।। टेक।।
घाम छाँह जब नहिं दुनियांमें नहीं रहे शेष सहस फडके रे।।१।।
नहीं रहे ब्रह्मा शिव सनकादिक नहीं रहे जिनके सब चेरे।।२।।
जैसे बाज झुके बकुलाके वैसे गति होइ है नर तेरे।।३।।
दूलमदासके साईं जगजीवन सतगुरु शरण वचन बहुतेरे।।४।।१४।।

वरणौं मैं सन्त समाज जिनके ज्ञान कचहरी।। टेक।।
सन्तोष तखतपर मन राजा
विवेक जहां दरवानी क्षमा बिछौना।
संत सिपाही हरिको नाम खजाना।।१।।
काया गढ़में भक्ति जमी है सेन ध्वजा फहरानी।
त्रिकुटी ज्योति छत्रके ऊपर मुक्ति भरै जहँपानी।।२।।

काम क्रोधका गर्दन मारो माया शहर उजारो।
सांचा अदल चलावो।।३।।
दफ्तर दया वचन कर शीतल तनुकी तपनी बुझावो।
पलटूदास कहै मन सारक सांचा अदल चलावो।।४।।१५।।

मन तोसे केतनी बेर कही।। टेक।।
मन मातंग कहा नहिं मानै अंकुश कुलिश सही।
हीरा रतन अमोलिक तजिकै कांचुक कलियां गही।।१।।
न सतसंग न साधु की सेवा एको ना निबही।
कौल किहेउ हम रामको भजबे पय तजि पियत मही।।२।।
मधुकै माछी माया मोह तजि वनकी ओट गई।
आये वधिक सबै रस ले गये नैनो से नीर बही।।३।।
शिव सनकादि आदि ब्रह्मादिक सुख चाहत सबही।
तुलसिदास भगवान भजन बिन सुख तीनिउँ लोक नहीं।।४।।१६।।

हमारे मन शरम गई सब छूट।। टेक।।
नारीमें नर ऐसा मोहा सबमें पारै फूट।
लालचमें मन ऐसा भूला निशिदिन बोलत झूँठ।।१।।
अरबन खरबन बहुतक जोरे तऊ खाली रहि मूट।
दौड़त दौड़त ऐसा दौड़ा भ्रमत फिरत चहुँ खूट।।२।।
ऐसा अवसर चूका जाता लूटत बने सो लूट।
काल बली जब फंदा डाले धर फिर मारे कूट।।३।।
मांझ महलसे निकस चले जब सबसे नाता छूट।
कहै भगवानदास तुमने मेरे देखे राम अटूट।।४।।१७।।

भजु मन रामचरण सुखदाई ।।टेक।।
जो चरणनसे सुरसरि आई शंकर जटा समाई।
जटा शंकरी नाम परा है त्रिभुवन तारन आई।।१।।
जिन चरणनके चरण पादुका रहे भरत लवलाई।
जब केवट कठरा भरि धोवै तब प्रभु नाव चढ़ाई।।२।।
दण्डकवन पावन प्रभु कीन्हों ऋषिका शाप मिटाई।
जो स्वामी तीनिउँ लोकके ठाकुर कपट कुरंग सँग धाई।।३।।
कपि सुग्रीव बन्धु भय व्याकुल तेहि शिर छत्र फिराई।
रिपुके अनुज बिभीषण मिले हैं परसत लंका पाई।।४।।
शेष सहस शत जपै निरंतर गावत पार न पाई।
तुलसिदास मारुतसुत महिमा हरि अपने मुख गाई।।५।।१६।।

अवधू गगन घटा घहरानी।। टेक।।
काली पीरी बदरी उठी है पश्चिम से बरसत पानी।
ज्ञानी आपन मेड सम्हारो बहि न जाय यह पानी।।१।।
सुरतिके हो बैल बनाओ खेत जोरे निरबानी।
दुबिधा दूब गोंडि बाहर करबो वो नामका धानी।।२।।
चित्र गोपि बैठ रखवारा चुनि न जाय मृग धानी।
निपट खेत राशी घर आवै तब होइ पूरी किसानी।।३।।
पांच सखी मिल सीझ रसोइयां जेवै ऋषी मुनि ज्ञानी।
कहत कबीर सुनो भाई साधो यही संत की बानी।।४।।१९।।

संतो संत बिलग को कीना।। टेक।।
जाति पांति कुल मर्यादा सब हम दीन बहाई।
जाति पांतिका भर्म उठावै सो होइ नाम अधीना।।१।।

तुलसी ब्राह्मण बडे कुलीना संतकी जान प्रवीना।
सूपा भगत रैदास चमारा आप बरोबर कीना ॥२॥
ना मानो तो साखि देखावों अबहीं चेतु कमीना।
नामी है भंगीका बालक तहां परसादी लीना ॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो इतनी साखी हम दीना।
गुरुमुख होय तो शब्द विचारै निर्गुण कर्मका अधीना ॥४॥२०॥

गुरु दरियाव नहाना हो जाकी दुर्मति भागी॥ टेक॥
जौं लग गुरु दरियाव न पावो तौ लग फिरत भुलाना हो॥१॥
कोटिन तीर्थ गुरुजीके चरणन जिन श्रीमुख आप बखाना हो॥२॥
गुरु दरियाव सदा जल निर्मल उपजत पैठत ज्ञाना हो॥३॥
पलटूदास गुरु पैठि नहाने रहित होइके आना जाना हो ॥४॥२१॥

सुनु पंडित रे या कवन बरन विरमैयां॥टेक॥
एक बरनसे सकल परा दूजे कहा ठहरैयां।
ब्रह्मा विष्णु महेश प्रगट भये से कुलकानी लगैयां ॥१॥
आदि वेदवेदांत कहत हैं उनहूँ का गो हरैयां।
कौने ज्ञानसे चारि कहत हैं वेदऊ मता उडैयां ॥२॥
पूजा नेम तपस्या आछी तैं सब थिरनिक थैयां।
फटकि पछोर पूरकर सौदा दूर बहावों पैयां ॥३॥
सोधि बाधिकै मोहिं बताओ छांडहु कपट चतुरैयां।
रामरमा सो पूरा पंडित कहत मदन मुख तैयां ॥४॥२२॥

बाजै एक तार सुनब दिन रतियां॥ टेक॥
अनहद तार अलख गति बाजै कैसे कहो कुदरतकी बतियां॥१॥
पांच तत्त्वका बना तमूरा खूटी लगी है योग युगतियां॥२॥

क़र फेरै करतार नचावै तिरगुट महल चढि नाचत सुरतियां ।।३।।
भगवानदास एक सखी सयानी कैसे कहो गगनकी बतियां ।।४।।२३।।

बाजत धाम गगन ध्वनि गरजै ।। टेक ।।
तीन लोकसे कोटवा निआरा नारद मुनि जहां करत विसराम ।।१।।
कोटवाकी महिमा कहां लगि वरणों तर बह सरयू सहारदा गाँव ।।२।।
त्रेता जन्मे लक्ष्मण राम द्वापर गोपी कान्ह ।।३।।
कलऊमें जगजीवन साहबसे ली टोपी धागा निसान ।।४।।२४।।

अबसे खबरदार रहु भाई ।। टेक ।।
सतगुरु दीने माल खजाना राखो जुगुति बनाई ।
घटै न पावे पारवतीको दिन दिन बढै सवाई ।।१।।
वस्तु पाइ गाफिल मति रहना दिन दिन करो कमाई ।
यह नगरी में चोर बसतु है बैठा घात लगाई ।।२।।
तनु बंदूक मनैको सिंगरा ज्ञानको गज ठहराई ।
सुरति पलीता हरदम सुलगै करपर रहो चढाई ।।३।।
क्षमा शीलकी अलफी पहिरो युगति लँगोट बनाई ।
दयाकी टोपी शिरपर सोहैं अबसे अधिक बनि आई ।।४।।
बारह वाला खड़ा सिपाही ऊ सोवै जो भाई ।
दास कबीर कबहूँ न सोवै सोवत हंस जगाई ।।५।।२२।।

गुरुसे भेद पूछने आया ।। टेक ।।
कहवां से तू मूड़ मुड़ाया कहवां आसन लाया ।
बिना गुरूका सुमिरण करवा बिरथा जन्म गँवाया ।।१।।
अलखपुरासे मूड़ मुड़ाया सुमिरन आसन लाया ।
राराकार सबै घट घेरे उनहूँसे रगर लगाया ।।२।।

ओहन सोहन बाजा बाजै अनहद घंट बजाया।
त्रिगुन और तेपे के ऊपर सोहन को घर पाया।।३।।
जरा सिन्धु से शब्द उलाची सुखमनि सिंधु समानी।
अस मन होय वहां जाय बिहारों गगनमण्डल मठि छाया।।४।।
दत्तात्रेय आदिका योगी चौबिस गुरू कराया।
योग शंख एको नहिं पाया घर घर भटका खाया।।५।।
चौदह ग्रन्थ कबीरहि भाषा साढे बारह आया।
डेढ़ बार यह नाम बिसरि गया साहब पकड़ि मँगाया।।६।।
चौदह तपक तेहुँके वहां निशान घुमाया।
जगजीवनदासके संतगुरू समरथ अचल साहबी पाया।।७।।२६।।

कल न परे बिनु देखे सैयांके अनुहारी।। टेक।।
संगमें कोटि अजायब जहां दरशन दुवारी।
जहँवा सन्तगुरू बैठा हो चरणन बलिहारी।।१।।
अनहद किंगिरि बाजै हो ध्वनि शब्द सोहाये।
ब्रह्मा विष्णु शिव मोहे हो जाकी झलकि देखाये।।२।।
निर्मल ज्योति निहारो हो गति वहां अपार।
जहँवां रूप न रेखा हो मन करत बिहार।।३।।
अलख पुरुषकी पांवरी हो जहां निरति करार।
सांइ जगजीवन मंसा हो जहां पुर धुधुआर।।४।।२७।।

सांई तो अपने पास हो कहि दरद सुनावो।। टेक।।
सांई तो जल थल घटघट व्यापित धरती पवन आकाश हो।।१।।
चिड़ियां एक खडी जल भीतर रटत पियास पियास हो।।२।।
मुख नहिं पीवै अँजुरिन लावै नैनन पीवै हलोरी हो।।३।।
जल बिच कमल कमल कलिय तामें भँवर लीनो वास हो।।४।।

ई जग ढूँढ़ो ऊ जग ढूँढ़ो पायउ अपने पास हो॥५॥
सब संतनके चरण भरोसे गावत दूलमदास हो॥६॥२८॥

भव भंजन गुण गावों मैं अपने रामको रिझावों॥ टेक॥
वन वन घुमरो पात नहीं तोरौं न मैं डार ओनवों।
पात पातपर साहब मेरो सबसे शीश नवावों॥१॥
जडिया न जानों मुलवा न जानों ना मैं वैद्य बोलावों।
पूरा वैद्य मिले अविनाशी तासों नारि धरावों॥२॥
तीरथ जावों न जलमें हलों ना ना मैं जीव सतावों।
अडसठि तीरथ हैं घट भीतर मनहीसे तनु नहवावों॥३॥
जगमें गुरू बहुत कनफुकवा वंशीलाय रिझावों।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो भेदीकान्त लखावों॥४॥२९॥

कांगवा घर दूर देवाने मन॥ टेक॥
सुलतानासे चला बुलक जब छोडि जवाहिर हीरा।
खेतपर कुइयां हिई लटके हो मगये चकनाचूर॥१॥
ब्रह्माको दीनो दंड कमंडलु शिवको दीनो तिरशूल।
माला टोपी विष्णुको दीनो उनहुके फिर गये नूर॥२॥
गोपीचन्द भरथरी गोरख मले जटनमें धूर।
ईतो जीवै लाख बरिसवा तब हुँ न पहुँचै हुजूर॥३॥
कहै कबीर सुनो भाई साधु यम घर जाना जरूर॥४॥३०॥

छोडो मन मनकी कुटिल कुबानी॥ टेक॥
हंसनने बहुत समझाये तुमने एक न मानी।
छोडत नहीं तुम बानि आपनी विषको अमृत जानी॥१॥

माया मछरी पकरी तुमने हंसकी राय भुलानी।
देश हंस मानसरोवर उसको नहीं पहिचानी॥२॥
ज्ञानरूप मुक्तफल छोडो मछली विषय सुहानी।
धिक धिक जीवन तेरा जगमें हानि लाभ नहीं जानी॥३॥
हँसा उड हंसा हंसनमें मिल गये आवागमन नशानी।
भगवानदास मूरख है बालक भाव भजन नहीं जानी॥४॥३१॥

मूरुख मन काहिके करत अभिमान॥ टेक॥
दयाधर्मकी रहनी गहकर गुरुसे सीख सिखान।
तेरा स्वामी है घट भीतर ज्ञान नेत्र दरशान॥१॥
बिनु गुरु वस्तु मिलै नहिं कबहूँ कोटिक सुनो कहान।
ज्ञानका दीपक हाथमें लेकर फिरि घरमें घुस जान॥२॥
आपन साहब है घट भीतर ताकी सुधि बिसरान।
मरन जियनकी दुविधा मिट गई तिनका ओट दिखान॥३॥
भगवानदास कपटमन छोडो गुरुसे करहु मिलान।
मोहजालके भ्रममें पड़कर मणि अपनी नहीं जान॥४॥३२॥

चेतो मन जननी मति बौरानी॥ टेक॥
कोई हिन्दू कोई तुरक कहावै भेदवाद सब ठानी॥१॥
अंतर ध्वनिकी खबर न जानी ऊपर कथनी सानी॥२॥
सतगुरु खोज ब्रह्म तुम चीन्हों नहिं तर फिर पछतानी॥३॥
भगवानदास जग जन्म न पावो रहती नहीं निशानी॥४॥३३॥

इति भजनरामायण समाप्त।

*****

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान ;

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५.
फैक्स -०२०-२६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADA

